बदलती राहें

Gunjan

वर्ष 01, अंक 26
धर्मशाला, सोमवार, 24 अगस्त 2015

ये हैं नशे का शिकार युवाओं के इलाज के आवश्यक तरीके

मादक द्रव्यों के सेवन की समस्याओं से जुझ रहे किशारों के इलाज के दौरान मोटे तौर पर उन्हें शराब और नशीली दवाओं की समस्याओं से निजात पाने में मदद की जाती है। इसका इलाज और हस्तक्षेप के तरीके आवासीय कार्यक्रमों के तहत व्यक्तिगत संपर्कों, परामर्श सत्र और समूह व समाज आधारित सेवाओं के विभिन्न प्रकारों पर निर्भर करते हैं। इन गतिविधियों का संचालक परामर्शदाता, चिकित्सक, नर्स, परावर्तन अधिकारी, एजूकेटर और युवाओं से जुड़ी नशे की समस्याओं को दूर करने में रुचि लेने वाला अन्य कोई भी व्यक्ति कर सकता है। इस दृष्टिकोण से, यहां तक कि संबंधित युवा के अभिभावकों और अन्य मुहत्वपूर्ण व्यक्ति को भी इलाज की गतिविधि में शामिल किया जा सकता है। हम आपके समक्ष ऐसी टूलकिट प्रस्तुत करने जा रहे हैं, जिसके जरिये हम इन व्यापक संदर्भों के तहत इलाज पर चरचा करेंगे।

समस्याग्रस्त युवाओं के मादक द्रव्य सेवन की परिभाषा

समस्याग्रस्त युवाओं को शराब और नशीली दवाओं के प्रयोग से क्या मिलता है, यह बात पेशेवरों के बीच अक्सर बहस का विषय रहती है। इसका जवाब पाने के

प्रयोजनों के लिए, युवाओं द्वारा मादक द्रव्यों के सेवन का कारण मोटे तौर पर इस तरह परिभाषित किया जा सकता है:

ऐसी स्थिति जहां शराब और/या मूड में फेरबदल करने वाली दवाओं का इस्तेमाल नकारात्मक रूप में एक युवा व्यक्ति के जीवन के किसी भी क्षेत्र के साथ हस्तक्षेप करता है। इसे स्कूल, काम, परिवार, दोस्तों और/या कानूनी रूप में सामाजिक क्षेत्रों में देखा जा सकता है। यह भी शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और/या आध्यात्मिक स्वास्थ्य और भलाई के निजी क्षेत्रों में भी देखा जा सकता है।

किशोर की परिभाषा:

किशोरावस्था को विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया जा सकता है। मौजूदा विषय के संदर्भ के प्रयोजनों के लिए किशोरावस्था को बचपन (यौवन) और जल्दी व्यस्कता के बीच की स्थिति, जिसमें वर्ष 12–19 की आयु के युवा शामिल होते हैं, के तौर पर परिभाषित किया जाएगा। इस अध्ययन में युवा और किशोरावस्था को आपसी बदलते संदर्भों में इस्तेमाल किया जाएगा।

इस अध्ययन का उद्देश्य किशोरों के मादक द्रव्यों के सेवन के मुद्दों के साथ काम करने में मदद करने के लिए पेशेवरों और अन्य संबंधित व्यक्ति की सहायता करना है।

इस दौरान किशोरों में मादक द्रव्यों के सेवन के इलाज से जुड़ी सर्वोत्तम प्रथाओं पर चर्चा की जाएगी, साथ ही इस आयु समूह के साथ काम करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान के बारे में भी बताया जाएगा।

कैसे काम करता है यह टूलकिट ?

मौजूदा अनुसंधान इंगित करता है कि इलाज के विभिन्न तरीकों की प्रभावशीलता कई कारकों पर निर्भर करती है, इनमें हस्तक्षेप करने का समय और युवाओं की व्यक्तिगत विशेषताएं शामिल होती हैं। भले ही, इस बात पर आम सहमति है कि किशोर मादक द्रव्यों के सेवन के इलाज के लिए क्या सर्वोत्तम प्रथा होती है।

ये सर्वोत्तम प्रथाएं इस प्रकार से हैं

1. युवा के साथ मजबूत चिकित्सकीय रिश्ते या गठबंधन का विकास करना: ऐसा काऊंसलर के सम्मानपूर्ण व्यहार के माध्यम से हो पता है। एक किशोर क्या कह रहा है, इसे ध्यान पूर्वक सुनना और सभी मरीजों से बातचीत के दौरान आलोचनात्मक रवैये पर काबू रखना जरूरी होता है।

2. निरंतर संपर्क और मूल्यांकन करना: जब काऊंसिलिंग सत्र की समयावधि छोटी होती है, तो युवाओं की काऊंसलर के साथ संलग्न रहने की अधिक संभावना होती है। ऐसा लगातार होता है, तो इससे युवा को समय के साथ-साथ काऊंसलर संग विश्वास विकसित करने में मदद मिलती है। इससे काऊंसलर को युवा को समझने में मदद मिलती है और वह एक निरंतर आधार पर उसकी जरूरतों का आकलन कर पाता है।

3. व्यक्तिगत उपचार को बढ़ाना, जो ग्राहक केंद्रित हो: संस्कृति, लिंग, धर्म, यौन अभिविन्यास, पहचान और विविधता के मुद्दों को ध्यान में रखकर भी उचित इलाज हो पता है। ग्राहक वरीयता, परिवार और रहने की परिस्थितियों, सामुदायिक संबंधों, और उपचार तक पहुंच के विचार भी इस इलाज में शामिल करना होते हैं। ऐसा सकारात्मकता पर ध्यान देने के साथ शुरू होता है और इससे इलाज में प्रगति के छोटे संकेतक मिलना शुरू हो जाते हैं।

4. उपचार में परिवार का सहयोग: इसके तहत अभिभावकों और अन्य महत्वपूर्ण लोगों को इलाज की प्रक्रिया में शामिल किया जाता है। मूल्यांकन प्रक्रिया के दौरान प्रभावित युवा के परिजनों या उसके द्वारा चिन्हित विशिष्ट व्यक्ति को किशोर द्वारा मादक द्रव्यों के सेवन से होने वाले नुकसान के बारे में शिक्षित किया जाता है। साथ ही किशोर के साथ किए जाने वाले व्यवहार को लेकर परिवार की गतिशीलता और अन्य पारिवारिक मुद्दों के बारे में बताया जाता है।

5. एक समग्र, मनोसामाजिक नजरिए से इलाज करना: प्रत्येक युवा को कामकाज के व्यापक संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं, शारीरिक / भावनात्मक / आध्यात्मिक, परिवार और संबंधित सामाजिक नेटवर्क, समर्थन की प्रणाली, कानूनी परिस्थितियों, मानसिक आघात, वित्तीय संसाधनों, और स्कूल की ओर ध्यान भी शामिल है, को समझने की जरूरत है। मादक पदार्थ का उपयोग करने और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से संयुक्त तौर पर उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर भी विचार किया जाना चाहिए। इसके लिए इंटिग्रेटेड ट्रिटमेंट अप्रोचिज और मल्टीसिस्टम अप्रोचिज अपनाई जाती हैं।

6. एक संज्ञानात्मक व्यवहार और प्रेरक साक्षात्कार अप्रोच: मादक द्रव्यों के सेवन से जुड़ी आबादी के साथ संज्ञानात्मक व्यवहार थेरेपी की खूबियों को इसके इलाज में अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है। बदलाव के लिए एक युवक की तत्परता के साथ एक प्रेरक दृष्टिकोण मिलान बहुत कारगर हो सकता है।

7. नुकसान कम करने के समझौते से शुरुआत करना: नुकसान में कमी का अर्थ मादक पदार्थों के उपयोग से होने वाली हानि को कम करने के लिए डिजाइन उपचार रणनीतियों और उपायों को लगातार अपनाना है। यहां सबसे महत्वपूर्ण विचार युवा व्यक्ति को वर्तमान प्रेरणा के साथ इलाज की प्रक्रिया में जोड़े रखना है। साथ ही युवाओं को सार्थक और प्राप्य लक्ष्य प्रदान करना भी जरूरी है। इसके अलावा युवाओं को कौशल विकास में ध्यान केंद्रीय करवाना, अनुभवात्मक, भागीदारी, सहयोगी व मजाक से जुड़े कार्यक्रमों से जोड़ना, सुरक्षित व स्वागत योग्य उपचार सेटिंग्स प्रदान करना और उपयोग करने में आसान इलाज के संसाधन मुहैया करवाना भी इस टूलकिट के महत्वपूर्ण अंग हैं।

चालक पति की गलती से मुसीबत में आ गया सोमा का परिवार

मैं सोमा देवी (काल्पनिक नाम) एचआईवी पाजिटिव हूं। मेरे पति की मृत्यु आज से पांच साल पूर्व एचआईवी के कारण हुई थी। तब मेरी शादी को 15 साल हो चुके थे। मेरे तीन बच्चे हैं। एक 15 साल, दूसरा 12 साल और तीसरा 10 साल का है। इनमें दो लड़के और एक लड़की है। सोमा बताती है कि उसके पति ड्राइवर थे। वे मुंबई व दिल्ली में गाड़ी चलाते थे। एक दिन उसके पति अचानक बीमार हो गए। उन्हें अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में बीस दिन के इलाज के बावजूद उन्हें कोई आराम नहीं मिला और उनका मर्ज डाक्टरों की समझ में नहीं आ रहा था। तब डाक्टरों ने उनका एचआईवी टैस्ट करवाया तो बीमारी के असल कारण का पता चला।

सोमा बताती है कि जब वह अपने पति के टैस्ट की रिपोर्ट लेने गई, तो उसे इस बीमारी के बारे में कुछ पता नहीं था। इतना ही नहीं उसने एचआईवी पाजिटिव के बारे में सुना तक नहीं था। टैस्ट रिपोर्ट देने वाले कर्मी ने उसे अपने पति को लेकर आने को कहा। तब उन्होंने उसे व उसके पति को बताया कि रिपोर्ट में एचआईवी पाजिटिव आया है। यह सुन कर सोमा को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि यह कौन सी बीमारी है। जब उसे इस बीमारी के बारे में बताया गया तो वह हक्की-बक्की रह गई।

उसके पति इतने ज्यादा बीमार थे कि जब तक उन्हें एचआईवी की दवाई शुरू की जाती उसी रात को उनकी मौत हो गई। इसके बाद सोमा को अपना टैस्ट करवाने को कहा गया, तो उसकी रिपोर्ट भी एचआईवी पाजिटिव आई। फिर उसके बच्चों का टैस्ट करवाया गया, तो दो बच्चे एचआईवी से सुरक्षित पाए गए मगर छोटा बेटा एचआईवी पाजिटिव आया। इस तरह सोमा के पति की गलती का खामियाजा अब उसके साथ-साथ उसके बेटे को भी भुगतना था। सोमा को अपने से ज्यादा अपने बच्चे की चिंता सता रही थी।

सोमा को समझाया गया कि वह डरे नहीं और अपने साथ-साथ बच्चों को ध्यान रखे और एचआईवी की दवाई नियमित ले। इस तरह उसे व उसके बच्चे को दवाई देना शुरू किया गया। इसके बावजूद सोमा को अपने बच्चे की चिंता सताने लगी और इसी के चलते वह ज्यादा बीमार हो गई। वह अस्पताल गई, वहां उसे बताया गया कि वह कम्युनिटी स्पोर्ट सेंटर की मदद ले। यहां से उसे जरूरी सहायता के साथ-साथ परामर्श भी दिया जाएगा। इस पर वह सीएससी में आई और यहां की काऊंसलर रजनी से मिलीं। काऊंसलर ने सोमा को अराम से बिठाया और उसे एचआईवी के बारे में वो सारी बातें बताईं, जो वह नहीं जानती थीं। उससे यह भी बताया गया कि अब जो हो गया सो हो गया, आगे उसे एतिहात बरतनी है और बिना किसी चिंता के नियमित तौर पर दवा लेनी है। इससे ही वह और उसका बच्चा बिना बीमारी के सामान्य जीवन व्यतित कर सकते हैं। सोमा को समझाया गया कि वह नकारात्मक सोच अपनाकर स्वस्थ नहीं रह सकतीं। उसे अपने साथ-साथ अपने बच्चों का भी ख्याल रखना है। काऊंसलर ने एक ऐसे परिवार से मिलाया, जिनके चार बच्चे हैं और वे सभी एचआईवी पाजिटिव हैं। यह परिवार नियमित तौर पर दवाई ले रहा हैं। इस परिवार से बातचीत के बार सोमा का भी हौसला बढ़ा और उसकी चिंता खत्म हुई। तब से वह और उसका बच्चा दोनों नियमित तौर पर दवाई ले रहे हैं। सोमा ने सीएससी और इसे चला रही संस्था गुंजन का आभार प्रकट करते हुए कहा कि अगर यहां से उसे सही परामर्श न मिला होता तो वह न जाने किस हालात में होती। सोमा ने कहा कि सीएससी में उनके जैसे लोगों को जो प्यार व परामर्श मिलता है, उसके कारण ही आज उन जैसे एचआईवी पाजिटिव लोगों का जीवन निरोग व सामान्य होने लगा है।

महिलाओं की सेहत के लिए जरूरी हैं ये सात विटामिंस

सुबह से लेकर रात तक की दिनचर्या में महिलाएं हर तरह की जिम्मेदारियां निभाती हैं, लेकिन कई बार वे अपने स्वास्थ्य के प्रति उतनी सजग नहीं होती। जितना वे शरीर से काम लेती हैं, उतना ध्यान नहीं रख पातीं, जिससे उन्हें स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

इन स्वास्थ्य समस्याओं से बचने के लिए जरूरी हैं, कि महिलाएं अपनी डाइट में कुछ जरूरी पोषक तत्वों को अनिवार्य रूप से शामिल करें। आइए जानते हैं कौन से हैं वे पोषक तत्व जो महिलाओं के लिए बेहद जरूरी है-

1. आयरन - शरीर में लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण के लिए आयरन बेहद आवश्यक होता है, जिससे शरीर में उर्जा को बनाए रखता है और खून की कमी नहीं होने देता। इसके अलावा मस्तिष्क को सुचारू रूप से कार्य करने के लिए आयरन को अपनी डाइट में शामिल करना बहुत जरूरी है।

2. कैल्शियम - हड्डियों को मजबूत रखने और ब्लडप्रेशर को नियंत्रित कर सामान्य बनाए रखने के लिए शरीर में कैल्शियम की आवश्यकता होती है। इसके अलावा कैल्शियम प्रीमेंस्ट्रुअल सिंड्रोम के खतरे को भी कम करता है। यह दांतों और नाखूनों को मजबूत रखने के लिए जरूरी होता है।

3. फॉलिक एसिड - फॉलिक एसिड महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर और कोलोन कैंसर की संभावनाओं को कम करता है। इसके अलावा यह गर्भावस्था के शुरूआती महीनों में ही सेहत के लिए आवश्यक होता है। हरी सब्जियां, खास तौर से पालक, दाल व शतावरी के सेवन से फॉलिक एसिड की पूर्ति की जा सकती है।

4. विटामिन बी 6 - यह विटामिन आपकी नींद और भूख को नियंत्रित करने में मदद करेंगा। साथ ही आपके नर्वस सिस्टम को सुचारू रूप से काम करने में बेहद सहायक सिद्ध होगा। यह आपके मूड को भी बेहतर बनाए रखेगा। शकरकंद, केले जैसी चीजें इसकी पूर्ति में आपकी मदद सकती हैं।

5. विटामिन बी 12 - यह विटामिन आपको अत्यधिक थकान से बचाने में सहायक होगा। इसके अलावा यह लाल रक्त कोशिकाओं, हीमोग्लोबिन के निर्माण में भी सहायक है। दही और अंडे को अपनी डाइट में शामिल कर आप इसकी पूर्ति कर सकते हैं। अगर आप नॉन वेजिटेरियन हैं, तो मीट कर इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

6. विटामिन डी 3 - दांतों, हड्डियों और मांसपेशियों को मजबूत बनाने में यह आपकी मदद करता है। इसके अलावा यह ब्रेस्ट कैंसर और गर्भाशय के कैंसर से भी आपकी रक्षा करता है।

7. विटामिन सी- विटामिन सी आपकी त्वचा से लेकर बाल, आंखों और पूरे स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक होता है। यह रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर रोगों से लड़ने में आपकी मदद करता है।

मर्चेंट नेवी में हैं कैरियर के असीमित अवसर

यदि आप स्वयं को आत्मविश्वास से पूर्ण, अपने दायित्वों के प्रति जागरूक तथा चुनौतियों का सामना करने में सजग पाते हैं तो मर्चेंट नेवी के क्षेत्र में आपके लिए सुनहरे अवसर हैं। समुद्र के सीने को चीरकर आगे बढ़ने वाले जहाजों ने हमेशा से ही हमारे मन में कौतूहल पैदा किया है। प्रारंभ में जहां समुद्री आवागमन एवं व्यापार छोटी नावों तक सीमित था, वहीं आज विशालकाय पोत में तब्दील हो चुका है। समय के साथ बढ़ते नावों के आकार की तरह इन जहाजों में रोजगार के अवसर भी काफी बढ़े हैं। मर्चेंट नेवी एक ऐसा ही क्षेत्र है, जिसमें आप सुनहरे भविष्य की ओर मजबूती से कदम बढ़ा सकते हैं। मर्चेंट नेवी (व्यापारिक जहाजरानी) व्यापारिक जहाजों के जरिए सामान लाने-ले जाने वाली सेवा है। कभी-कभी इसके जरिए यात्रियों को भी लाया-ले जाया जाता है।

डेक विभाग

इसमें मुख्य रूप से जहाज के कप्तान, उपकप्तान, सहायक कप्तान, चालक, पत्तन मास्टर आदि आते हैं। जहां के मुखिया कप्तान का मुख्य दायित्व जहाज तथा उसके सभी कर्मचारियों व माल आदि का सुरक्षित परिवहन है। जहाज के कर्मचारियों और चालक दल पर इसका पूर्ण नियंत्रण होता है।

उपकप्तान- कप्तान के बाद जहाज का दूसरा मुख्य अधिकारी होता है। कप्तान की सहायता करने के साथ-साथ इसका मुख्य कार्य डेक कर्मचारियों, माल लादना, भंडारण आदि की गतिविधियों पर नजर रखना होता है। यह प्रशिक्षुओं व कर्मियों पर अनुशासन रखता है तथा उन्हें कार्य आवंटित करता है।

सहायक कप्तान- इसका मुख्य काम फर्स्ट मेट और कप्तान को जहाज के कामकाज और नौवहन के उचित संचालन में सहयोग करना है। माल लादने और उतारने के समय मुख्य रूप से इसे रात्रि पाली की देखरेख करनी होती है। क्रोनोमीटर, गाइरोकम्पास आदि जैसे मुख्य नौवहन उपकरणों की देखभाल और कर्मचारियों की शिफ्ट ड्यूटी का संचालन भी इसी के जिम्मे होता है।

द थर्ड मेट- इसका मुख्य कार्य सिग्नल उपकरणों, सुरक्षा और लाइफ बोट्स आदि की देखभाल करना होता है। यह इंजन तक कप्तान के आदेश भी पहुंचाता है और उन आदेशों का पालन भी करवाता है।

पायलट ऑफ शिप- इसकी मुख्य जिम्मेदारी आने-जाने के लिए नहर अथवा बंदरगाह आदि में पानी के अन्य जहाजों के अनुरूप स्वयं के जहाज की गति एवं दिशा तय करने जैसे कार्य करने की होती है।

सेरंग- यह डेक कर्मचारियों पर नियंत्रण रखता है तथा सुपरवाइजरी का कार्य करता है।

इंजन विभाग

इस विभाग का मुख्य उत्तरदायित्व जहाज के इंजन तथा उस पर नियंत्रण रखने वाले उपकरणों का रखरखाव करना तथा उनकी मरम्मत आदि करना होता है। इसमें मुख्य रूप से निम्न अधिकारी होते हैं-

शिप इंजीनियर- मुख्य अधिकारी होने के नाते इसे सभी इंजनों, बॉयलरों, इलेक्ट्रिक प्रशीतन, सेनेटरी उपकरणों, डेक मशीनरी व स्टीम कनेक्शनों के सही व सहज संचालन की जिम्मेदारी निभानी होती है। यह इंजन रूम का प्रभारी होता है।

इलेक्ट्रिकल ऑफिसर- इंजन रूम के सभी इलेक्ट्रिकल उपकरणों को संभालने का मुख्य दायित्व इलेक्ट्रिकल ऑफिसर का ही होता है।

रेडियो ऑफिसर- मैरीन रेडियो ऑफिसर के नाम से प्रसिद्ध इस पद को पाने के लिए युवा वर्ग बहुत लालायित रहता है। यह मुख्य रूप से डेक पर काम करने वालों पर नियंत्रण रखता है। इस पद के लिए वायरलेस, कंप्यूटर तथा संदेश संप्रेषण के अन्य अत्याधुनिकतम उपकरणों, उनके संचालन, संदेश संप्रेषण आदि की जानकारी का होना भी जरूरी है।

नॉटिकल सर्वेयर- इसका मुख्य कार्य सागर के क्षेत्र विशेष के नक्शे, चार्ट आदि तैयार करना होता है ताकि बीच समुद्र में जहाज कहीं भटक न जाए या किसी समुद्री पर्वत, टापू या चट्टान से टकरा न जाए।

सेवा विभाग

जहाज की मरम्मत करने से लेकर उस पर काम करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों के रहने, भोजन, वस्त्र आदि की व्यवस्था का काम सेवा विभाग करता है। इसमें मुख्य स्टीवर्ड पूरे कामकाज की देखभाल करता है।

क्या है जरूरी योग्यता

यदि आप मर्चेंट नेवी के क्षेत्र में करियर बनाना चाहते हैं तो इसके दो रास्ते हैं- समुद्री इंजीनियरी में बी.एससी. की डिग्री हासिल कर या अभियांत्रिक अथवा समुद्री इंजीनियरी शाखाओं में डिग्री के उपरांत आप मर्चेंट नेवी में जा सकते हैं। भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और गणित विषयों के साथ 12वीं परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आप किसी जहाज में डेक कैडेट के रूप में प्रवेश ले सकते हैं। यहां आप तीन साल तक काम करते हुए प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। नेविगेटिंग ऑफिसर या नौ संचालन अधिकारी के रूप में नियुक्ति के लिए प्रशिक्षण के बाद भूतल परिवहन मंत्रालय द्वारा ली जाने वाली दक्षता परीक्षा उत्तीर्ण करना आवश्यक होता है। इसके अलावा डिग्री पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए उम्मीदवारों को शारीरिक और मानसिक रूप से भी फिट होना चाहिए। नेविगेशन का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद इनकी नियुक्ति कैप्टन श्रेणी के अधिकारी के रूप में होती है। इस क्षेत्र में करियर बनाने की इच्छा रखने वालों की दृष्टि पूरी तरह सही होनी चाहिए जबकि समुद्री इंजीनियरों को प्लस-माइनस 2.5 अंक तक के दृष्टिदोष को ठीक करने के लिए चश्मा पहनने की छूट है।

प्रशिक्षण संस्थाएं

मर्चेंट नेवी का प्रशिक्षण देने वाली दो अग्रणी संस्थाएं हैं- ट्रेनिंगशिप चाणक्य, मुंबई जिसमें समुद्री विज्ञान (नॉटिकल साइंसेज) में 3 वर्ष का डिग्री पाठ्यक्रम उपलब्ध है और समुद्री इंजीनियरी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता जहां समुद्री इंजीनियरी (मैरीन इंजीनियरी) में 4 साल का प्रशिक्षण दिया जाता है। इन दोनों संस्थानों के लिए उम्मीदवारों का चयन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) की प्रवेश परीक्षा के आधार पर होता है। यदि आप किसी प्राइवेट संस्थान से मैरीन इंजीनियरिंग का कोर्स करना चाहते हैं तो उसे सरकार द्वारा मान्यताप्राप्त वेबसाइट dgshipping.com में सूचीबद्ध होना चाहिए। अन्यथा आपकी 3-4 वर्षों की मेहनत एवं डिग्री प्राप्ति हेतु खर्च किया गया धन व्यर्थ चला जाएगा।

आकर्षक वेतनमान

मर्चेंट नेवी में वेतन व अन्य भत्ते काफी आकर्षक हैं। समुद्री अधिकारियों के लिए शिपिंग कंपनियों में प्रतिमाह 30 से 40 हजार रुपए मिलते हैं। अनुभव के आधार पर इनका वेतनमान 1 लाख रुपए तक पहुंच जाता है। इस क्षेत्र के प्रशिक्षितों के लिए विदेशी जहाजरानी कंपनियों में भी रोजगार के अच्छे अवसर उपलब्ध हैं। कई बहुराष्ट्रीय जहाजरानी कंपनियां डॉलर के रूप में वेतन देती हैं जिसकी राशि काफी अधिक होता है।

विधायक के नशा विरोधी अभियान को महिलाओं का समर्थन

पालमपुर (कांगड़ा)। अपने विधानसभा क्षेत्र में नशे के खिलाफ अभियान छेड़ने वाले विधायक एवं मुख्य संसदीय सचिव हि.प्र. जगजीवन पाल को महिलाओं का आपार समर्थन मिला है। पालमपुर में हुए सुलह विस क्षेत्र में पिछले दिनों हुए महिला सम्मेलन में महिला मंडलों ने सीपीएस जगजीवन पाल द्वारा चलाए जा रहे नशे के खिलाफ अभियान का समर्थन किया है। ज्ञात रहे कि विधायक ने ट्रैफिक नियमों के पालन को लेकर भी मुहिम छेड़ी है।

जगजीवन पाल ने सुलह विधानसभा क्षेत्र की सभी पंचायतों के महिला मंडलों की बैठक पालमपुर के विला कमेलिया हाल में बुलाई थी। पाल ने कहा कि यह अभियान अभी एक प्रारंभिक दौर में है। उन्होंने बताया कि ९ अगस्त से शुरू हुआ यह अभियान काफी सफल रहा है। इसे स्थानीय लोगों के साथ-साथ नशे के अभिाना से जुड़े स्वयंसेवी संगठनों और बुद्धिजीवियों का भी आपार समर्थन मिला है। साथ ही विधायक के इस कदम की हर कोई प्रशंसा कर रहा है।

इस अभियान के तहत जहां सुलह क्षेत्र में अवैध शराब की बिक्री और नशे के कारोबारियों को खुलेआम चुनौती दी गई है, वहीं यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों पर भी पुलिस के सहयोग से कार्रवाई की गई है।

गुंजन संस्था के निदेशक संदीप परमार ने कहा कि जिस प्रकार से सीपीएस जगजीवन पाल ने अभियान चलाया है, उसी तर्ज पर हर विस क्षेत्र में नशे के खिलाफ अभियान शुरू किया जाए तो प्रदेश में नशे की लत का शिकार हो रहे युवाओं को बचाया जा सकता है। इसके अलावा शराब के नशे के कारण परिवारिक कलह को भी खत्म करके खुशहाल हिमाचल की कल्पना को साकार किया जा सकता है। उन्होंने जगजीवन पाल के अभियान प्रशंसा की है।

आई.ई.सी. मेटिरियल डवेलप्मेंट - पोस्टर श्रृंखला